गुरु नानक – सबद ४०

जत पाहारा धीरज सुनिआर ॥

जप, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ८

जत पाहारा धीरज सुनिआर ॥
अहरण मत वेद हथीआर ॥
भउ खला अगन तप ताउ ॥
भांडा भाउ अमृत तित ढाल ॥
घड़ीऐ सबद सची टकसाल ॥
जिन कउ नदर करम तिन कार ॥
नानक नदरी नदर निहाल ॥३८॥

सार: साहित्यिक उपकरणों के माध्यम से आवश्यक जानकारी हासिल करने के लिए प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व एक बहुमुखी और प्रभावी उपकरण है। किसी भी रचना में इस विधि का उपयोग जटिल विचारों को किसी संबंध से जोड़ कर आसानी से समझने के योग्य बनाते हैं। इस सबद में प्रतीकवाद को प्रस्तुत करने और वैचारिक संदेश को बेहतर ढंग से समझने के लिए परिचित तरीक़ों का उपयोग किया गया है।

जत पाहारा धीरज सुनिआर ॥
लचीलेपन को ढलाई भट्टी और धैर्य को सुनार के रूप में आत्मसात करें।

अहरण मत वेद हथीआर ॥
मन को धातु पर हथौड़े मारने वाली निहाई और आध्यात्मिक शास्त्र को हथीआर की तरह उपयोग करें।

भउ खला अगन तप ताउ ॥
निर्भयता को धौंकनी और ध्यान को आग की तपिश की तरह स्थापित करें।

भांडा भाउ अमृत तित ढाल ॥

भक्ति के अमृत को धारण करने के लिए स्वयं को एक पात्र के रूप में ढालें।

घड़ीऐ सबद सची टकसाल ॥

आलोचनात्मक विचारों को ज्ञान से ढालें, ताकि शुद्ध इरादों की टकसाल बन सके।

जिन कउ नदर करम तिन कार ॥

जिनके पास नेकी पर केन्द्रित काम करने की दृष्टि है।

नानक नदरी नदर निहाल ॥३८॥

नानक कहते हैं कि ऐसे दूरदर्शी को संतोष की दृष्टि की कृपा मिलती है। (३८)

तत्त्व: गुरु नानक ज्ञान प्राप्त करने के लिए चिंतन और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देते हैं, जो परोपकारी गुणों को प्रोत्साहित कर सकता है और किसी के व्यक्तित्व को संतुष्टि का प्रतीक बना सकता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com